ॐ सत्नाम साक्षी

भगवद् प्राप्ति का मार्ग

–: प्रवचन : –
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण - 2000
फरवरी-2012

मूल्य : 10.00

प्रकाशकः
श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर
फोन : 0141-2372423-24
e-mail : amrapurdarbar@yahoo.com
website : www.premprakashpanth.com

ॐ सत्नाम साक्षी

भगवद् प्राप्ति का मार्ग

दोहा : प्रथम वंदू गुरु पारब्रह्म, जो है सबका मूल ।
जांकी इच्छा ते बना, सूक्ष्म जग स्थूल ।
हरि हर सूर गणेश पुनि, शारदमात मनाइ ।
जाके पदवन्दन किये, सर्व विघ्न मिट जाइ ।।
सत्गुरू के पद पद्म का लेकर मैं आधार ।
कह टेऊँ संसार में, शोधि लिया निज सार ।।
सावधान होके सुनो, प्रीतम प्रीति लगाइ ।
शिखरध्वज चूड़ाला की, कथा कहूं मैं गाइ ।।

छन्द

जां ज्ञान वैराग विज्ञाना है,
पुनि पतिव्रत – धर्म प्रधाना है।
जितने जग नर नारी हैं,
वे इसके सब अधिकारी हैं।
कह टेऊँ जो सुन विचारे,
पावहिं सो जन मोक्ष द्वारे ।
मात गर्भ में फेर न आवे,
अजर अमर घर माहिं समावे।।

सारे प्रेमियों, सत्संगियों, गुरुमुखों, मुमुक्षुओं अपने शरीर इन्द्रियों को सावधान करके, नेत्र व कानों को, अपने मन को सावधान करके, हर एक जीव हर एक मनुष्य अपने मन को स्वयं समझावे। बार–बार

समझावे। मन की आदतें बदलावे, स्वभाव बदलावे। सत्शास्त्र महात्मा गुरु के वचनों में भगवन्त के नाम पर मन का विश्वास बढ़ाये। ये ही भक्ति करनी है। इतने हमारे ऋषि–मुनि महात्मा करके गये है। अभी कर रहे है। इसके बाद करेंगे। हे मेरे मन! ये मनुष्य चोला मिला है ये किस लिए मिला है ?........

दोहाः

''मानुष जन्म है मिला तुझे, फकत खाने के ना लिये।
ये तो मिला हरि भजन, पुनि प्रभु पाने के लिए ।।''

ये मनुष्य चोला किसलिए मिला है। ये खाने–पीने बाल–बच्चे पैदा करने के लिए नहीं। खास तौर से भगवान के भजन के लिए, प्रभु को पाने के लिए ये मानुष चोला मिला है। मनुष्य चोले में ही भगवान

मिलेगा, दर्शन होगा। चौरासी लख जूणी में नहीं, मनुष्य चोले में भगवान से मिलना है। गुरुनानक साहब ने श्री गुरुग्रन्थ साहब में लिखा है :–

''भई प्राप्त मानुष देहरिया,
गोविन्द मिलन की ये तेरी बरिया।
और काज तेरे कितइ न काम,
मिल साध संगत भज केवल नाम ।।
गुरु सेवा से भगत कमाई,
तबही मानुष देही पाई।
इस देही को सुमरहिं देव,
सा देही भज हरि की सेव।।

''भई प्राप्त मानुष देहरिया गोविन्द मिलन की ये तेरी बरिया ?'' गुरुनानक साहब कहते हैं कि ये जो

मनुष्य चोला मिला है। मनुष देही बरिया माना–वकत। मौका समय आया है। मनुष्य चोले में, इस जन्म में भगवान से बिछड़ा तो बिछड़ा, इस जन्म में मिला तो मिला। हे मेरे मन! प्रभु से मिल। मनुष्य चोला मिला है। हम दो वारी पंक्ति कहें। दो वारी पंक्ति भाई–माई पीछे बड़े प्रेम से बोलें। पहले हम अपने मन को स्वंय समझावें। फिर सत् शास्त्र समझायेंगे। क्या कहें :–

यही जपन की वेरा,

श्री राम जपो मन मेरा।

निशदिन प्रभू के गुण गाओ,

निशदिन प्रभू के गुण गाओ।

जीवन मुक्ति जग में पाओ,

जीवन मुक्ति जग में पाओ।

काल करे नहीं घेरा,

श्री राम जपो मन मेरा ।

यही जपन की वेरा,

श्री राम जपो मन मेरा ।

गज के बोलो श्री रामचन्द्र भगवान की जय !

हे मेरे मन! ये मनुष्य चोला मिला है, प्रभु का भजन कर। मनुष्य चोले में ही भजन का फल मिलेगा। चौरासी लख जूणी में जीव अपनी–अपनी भाषा में भजन कर रहे हैं। लेकिन उन्हें फल नहीं मिलेगा। वो अधिकारी नहीं है इस फल के, मनुष्य चोले का फल क्या है ? ''जीवन मुक्ति'', जीवन मुक्ति किससे होगी – आत्म ज्ञान से। पर ये पूरन आत्म ज्ञान पशु–पक्षियों को नहीं होगा। ये विषय भोग पदार्थ भजन का फल नहीं है ये कर्मों का फल है। हे मेरे मन ।

ये जो मनुष्य चोला मिला है।इसमें जीते ही मुक्ति प्राप्त कर।मरने के बाद मुक्ति कहां है।दो प्रकार की मुक्ति महात्माओं ने लिखी है –

1. जीवन मुक्त 2. विदेह मुक्त।

जो पहले जीवन मुक्त हुआ है वो ही विदेह मुक्त का फल पायेगा। हे मेरे मन! प्रभु का भजन कर। जैसे–चूड़ाला मन्दराचल बन में राजा शिखरध्वज अर्थात् अपने पति को ऋषि का सांग पहने कुम्भज मुनि नाम रखवा के, नारद का पुत्र, ब्रह्मा का पोता ब्रह्मा का शिष्य बोलकर राजा का विश्वास बंधाकर उपदेश कर रही है।हे राजन्! इधर मंदराचल बन में तू बैठा है। किसी महात्मा के शरण में जाकर बैठ। दृष्टान्त काफी दिये हैं। अन्त में कहने लगी हे

राजन्! चूड़ाला ने तेरे को ज्ञान दिया, संतो ने तेरे को ज्ञान दिया, पण्डितों ने तेरे को आत्म ज्ञान दिया। पर तूने उस आत्म ज्ञान को त्याग दिया है। तूने उन सबकी निरादरी की है।..........

"इतना सुनके मुनि से, भूप भया हैरान।
कैसे जानत हाल मम, खोल कहो भगवान ।।"

तब शिखरध्वज कहने लगा हे प्रभु बराबर आपने बात सच्ची कही है। परन्तु आपको मेरी स्थिति का सम्पूर्ण ज्ञान कैसे है ? आप कैसे जानते हैं चूड़ाला और संतों ने बराबर मुझे ज्ञान दिया है और मैंने उनकी निरादरी की है, अपमान किया है, क्योंकि राजा को पता नहीं है कि ऋषि का सांग पहने चूड़ाला रानी ही

राजा को विश्वास बंधवाकर उपदेश कर रही है। हे प्रभु आप सारी बात कैसे जानते हो। चूड़ाला कहती है,

हे ! राजन

राजन मैं जानत सभी, तीन लोक का ज्ञान ।
तांते संसा मत करो, और सुनो दे कान ।

इक तो यह तुम भूल करी जो,ब्रह्म ज्ञान को त्याग दिया।
और बड़ी तव मूर्खता जो,सर्व त्याग तुम नाहिं किया।
ब्रह्म ज्ञान से इसी जीव का, जन्म–मरण मिट जाते हैं।
सर्व त्याग से सुख ही होता, दूःख कभी ना आते हैं ।।

हे राजन् ! मेरे को संतों व ब्रह्मा ने आशीर्वाद दिया है कि तू सर्वज्ञ होगा। ये कोई कैसे जानता है क्या ? चूड़ाला उधर राज कर रही है। चिन्ता कर रही

हो, रो रही है। मेरे को पता है वो क्यों रो रही है ? इतना कथा का प्रसंग होकर के आया आज के प्रसंग में योग वशिष्ठ निर्वाण प्रकरण में बाल्मिक कहते हैं– हे भारद्धाज, वशिष्ठ महाराज कहते हैं – हे राम जी, सत्गुरु महाराज कहते हैं – हे जिज्ञासु, गुरूमुखों, मुमुक्षों इतना कहकर चूड़ाला कहती है – हे राजन्

''इक तो यह तुम भूल करी जो, ब्रह्म ज्ञान को त्याग दिया।'' तूने बहुत भूल की है। ब्रह्मज्ञान को त्यागकर तूने संतों की, पण्डितों की, चूड़ाला की निरादरी की है, उसके साथ में तूने ज्ञान की भी निरादरी की है। कटु वचन कहे है :–

''और बड़ी तव मूर्खता जो, सर्व त्याग तुम नाहिं किया।'' तूने त्याग नहीं किया है। त्याग के बिना

काम कैसे बनेगा ? जिन्होंने जो कुछ भी पाया है वो त्याग से ही पाया है। त्याग से ही परमपद की प्राप्ति की है। श्रीरामचन्द्र ने त्याग किया – राज का। श्री कृष्ण भगवान ने त्याग किया, भगवान शंकराचार्य ने त्याग किया, बुद्ध भगवान ने त्याग किया, कबीर साहब ने त्याग किया, गुरुनानक साहब ने त्याग किया, सत्‌गुरु टेऊँराम महाराज ने त्याग किया। त्याग दो प्रकार का होता है – याद करना। जो थोड़े दिन यहां पर है जो चार वचन सुनो उसको पहले घर जाकर के विचार करना। अगर शंका होवे तो पूछना क्योंकि पहले शंका समाधान काल बहुत चला था। कई प्रेमियों ने पूछा था। अगर शंका न हो तो जो चार वचन सुनो उसका विचार करना। हे मेरे मन! अगर इन वचनों पर सच्चा विश्वास करोगे तो लोक–परलोक में सदा सुखी

होगें। कभी भी दुःखी नहीं होगें। दुःख तुमने अपने आप खरीद किया है। दुःख है ही नहीं। हे राजन् ! तूने त्याग नहीं किया।

"त्याग, तप, सच, सादगी, प्रार्थना पुनि विश्वास।
कह टेऊँ ये धार के, पाओ सुख अविनाश।।"

त्याग दो प्रकार का है :–

1. स्थूल त्याग 2. सूक्ष्म(चित्त का) त्याग

दोनों त्याग होवें तो बलिहारी। नहीं तो चित्त का त्याग होवे। 1. स्थूल त्याग किसको कहते हैं :– बाल–बच्चों को छोड़कर जंगल में बैठना, तीर्थ में जाये या महात्मा के आश्रम में जाकर बैठे। ये स्थूल त्याग है।

सूक्ष्म त्याग किसको कहते हैं :– चित्त से त्याग करें, मन से भोगों की वासना का त्याग करके वेदविहित वर्णाश्रम धर्म का पालन करते हुए परमात्मा का भजन करता रहे। गृहस्थ के अन्दर कैसे त्याग करे ? शिक्षा पत्र के अन्दर एक शिक्षा आती है हरि :–

''धर्मशाला जान जग को, जीव सब मेहमान है।
मोह किससे ना करो, ये स्वप्न सम सामान है।''

ये घर संसार सारा धर्मशाला है, जो बोलता है मैं मुसाफिर हूं। मेरे को गुजर करना है वो संसार में कभी दुःखी नहीं होगा। दावा नहीं जमाना, मेरा कुछ भी नहीं है। हे मेरे मन! त्याग, तप करो। महात्मा गांधी ने तप किया। महात्मा गांधी भी व्रत रखते थे। महात्मा गांधी सोमवार का, महात्मा

विनोबा जो अभी नागपुर में है। जब हम नागपुर में गये थे तो वो मंगलवार का व्रत करते थे। तप करते थे। किसके लिए ? देश की सेवा के लिए। जब माता सती ने पिता के यज्ञ अग्नि में देह का त्याग किया। उसके पश्चात् माता सती ने पुनः पार्वती के रूप में उत्तराखण्ड में जन्म लिया। तब माता पार्वती ने तप किया था भगवान शंकर को पति रूप में पाने के लिए क्योंकि ऋषि, मुनियों ने माता पार्वती से कहा था कि आप तपस्या करो। तप से भगवान शंकर आपको मिलेंगे। यह सारा संसार तप के प्रभाव से बना है।

तप बल रचइ प्रपंचु विधाता
तप बल विष्णु सकल जग त्राता
तप बल शम्भु करहिं संघारा
तप बल शेष महि शिर धारा।

ब्रह्मा कई हुए हैं इस जगत में इनकी बड़ी कथायें है। विष्णु भगवान ने तप किया, सदाशिव संहार नहीं कर सका, तब तप किया। इन्द्रियों का तप, वाणी का तप। वो धीरे–धीरे आपको बतायेंगे। तो वो कैसे करें ? प्रेम से बोलो हरे राम । तप करें। त्याग, तप, सच अपने स्वार्थ, सुख के लिए कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए। झूठे आदमी का कभी उद्धार नहीं होगा। परोपकार, दूसरे के भले के लिए भली झूठ बोलो। बाकि अपने लिए नहीं ।

''सच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप ।
जांके हृदय सच बसे, तांके हृदय आप।''

सच से प्रीति करो।

सच से प्रीत सदा सुखदायी, सच से प्रीती करिये जी।
जिस प्रीती से सुमत मिलत है, सर्व कारज जग सरिये जी।
सच की सेवा निशदिन करके, द्वन्द्व दू:ख को हरिये जी।
कह टेऊँ तुम सच को हरदम, अपने हृदय धरिये जी।

सच में बड़ी ताकत है। सच का कभी नास नहीं होगा।

''आदि सच जुगादि सच, है भी सच, नानक होसी भी सच।'' सच को छिपाना नहीं चाहिए। वो सच तेरे अन्दर है। जिसके कारण यह झूठा शरीर चमक रहा है। स्वार्थ के कारण झूठ नहीं बोलना चाहिए। त्याग, तप, सच, सादगी । सादगी भी करो। ये है परलोक। जो आप आये हैं हम भी आये हैं तुम्हारे पास। ये है परलोक। इधर की भाषा दूसरी, लोग दूसरे, खाना–पीना दूसरा, चलना–फिरना दूसरा,

सब दूसरा। अपने देश का यह भी परलोक है, पर नाम है – पर्दे का। इस परलोक को सींगारें। अगर इसको सींगारा तो जो तीसरा परलोक है वो अपने आप सुधर जायेगा। प्रेम से बोलो हरे राम। कैसे सींगारें? ये बात इधर रखते हैं। फिर आप को बतायेंगे।त्याग, तप, सच, सादगी, प्रार्थना, विश्वास। विश्वास करके प्रार्थना करें। विश्वास के बिना पूरन फल की प्राप्ति नहीं होगी। प्रार्थना करें। सत्‌गुरु महाराज को।कौनसी प्रार्थना करें।हरि :–

कैसे ध्याऊँ प्रभु कैसे तुझे पाऊँ, मुझे बताओ – 2
होवां मैं गृहस्थी परम उदारी, दया धीरज सत्य व्रतधारी।
तीर्थ नाऊँ वा यज्ञ कराऊँ, मुझे बताओ ...... हरि
कैसे ध्याऊँ प्रभु कैसे तुझे पाऊँ, मुझे बताओ ।

हे भगवन् मैं कैसे तुझे पाऊँ । हे भगवन् कैसे तेरा दर्शन करूँ। कैसे मुक्ति मिले। मोक्ष के, भगवान के दर्शन के रास्ते हैं – दो ।याद करना ।

1. गृहस्थ मार्ग 2. त्याग मार्ग

हे प्रभु मैं गृहस्थ के अन्दर भक्ति करूँ । कैसे करूँ ?

''होवां मैं गृहस्थी परम उदारी, दया धीरज सत्य व्रतधारी।'' गृहस्थी क्या है ? दुनियां के अन्दर दो तरह के लोग होते है 1. उदारी 2. परम उदारी।

उदारी किसको कहते हैं – जो स्वयं को भी सुख दे और दूसरों को भी सुख दे। परम उदारी किसको कहते हैं – जो स्वयं को दुःख देकर भी दूसरों

को सुख दे।जैसे – अगर अभी भी कोई न समझा हो तो समझाते हैं।जैसेः– घर में दो रोटियां रखी हुई हैं। रोटी में दुनियां के सारे पदार्थ आ गये। एक मेरे खाने के लिए, एक ज्यादा रखी है।कोई आता है घर पर मंगता, भूखा कि, भगवान के नाम पर रोटी दे।जो ज्यादा है वो उसको दे दी । इसको कहते हैं उदारी ।परम उदारी किसको कहते हैं। रोटी है–एक। मेरे खाने के लिए। कोई आता है और कहता है प्रभु मैं भूखा हूं रोटी दो।तो अपनी रोटी उसको दे दी तो इसे कहा जाता है परम उदारी।

एक समय एक परम उदारी गरीब मजदूरी करके पच्चीस पैसे कमाता था, आपको तो पता है कि सिन्ध में 25 पैसे की कितनी कीमत होती थी। आप

सब सिन्ध के हो। पहले काम बहुत सस्ता था। अनाज भी कुछ सस्ता था वो तीन – चार आना लेकर सीधा सामान लाता था।सीधा (भोजन का सामान) लेकर के वो रोटी बनाकर स्त्री पुरूष और उनके दो बच्चे चार जीव रात को रोटी खाकर व दिन को पानी से गुजर करते थे। सच्ची करके पूछो। रात को एक वक्त रोटी खाते थे। एक दिन वो मजदूर मजदूरी करके सीधा (भोजन का सामान) लेकर शाम के समय घर आया तो एक मेहमान को रस्ते से जाते देखा तो वो उसे अपने घर लेकर आया, उसे खाट पर बिठाकर अपनी पत्नी को कहा मेहमान के लिए भोजन बनाओ ।तब तक वह मेहमान को पानी पिलाकर उससे खबरचार (हाल–चाल) लेने लगा। भाई कंवरराम के मुल्क में जब गुरु महाराज की मण्डली जाती थी तो प्रसाद

लेकर के खबरचार लेते थे। जब मेहमान ने अपना हालचाल बताया तो मजदूर समझ गया इसने सारे दिन से रोटी नहीं खाई है। सुबह से चला है पानी पर गुजर किया है। वह मजदूर अपनी पत्नी के पास आया और बोला इस मेहमान ने सारे दिन से रोटी नहीं खाई है। हमने भी नहीं खाई है। खाना है, चार लोगों का। मेहमान कैसे खाये ? इस पर उसकी स्त्री बोली–प्रभु जैसे आज्ञा करो। मजदूर बोला–जैसे मैं कहूं वैसे करेगी। स्त्री का धर्म है पतिदेव की आज्ञा मानना। पतिदेव की प्रसन्नता से चले। पत्नी ने कहा जो आज्ञा करो। तब मजदूर बोला रोटी सब पकाकर के, दाल कटोरों में डालकर तीन कटोरों में से दो खाली रखना, पानी के गिलास भरकर रखना। जैसे अपन खाते हैं। मैं मेहमान को लेकर आऊंगा। बच्चे भूखे रहेगें। मेहमान कहेगा, तूं

अपनी स्त्री को भी बुला, साथ में खाना खायेगें।क्योंकि पहले साथ खाने का रिवाज था और मेहमान मुसाफिर की भी सेवा करते थे। अतिथि की सेवा भगवान से बढ़कर महात्माओं ने लिखी है। तो मैं कहूंगा कि स्त्री अपने आप खायेगी।खट्‌टी सुनार भी साथ में खाते थे। तो मजदूर बोला अगर टुकड़ी बची तो अपन खायेंगे, नहीं तो कल खायेंगे। स्त्री बोली – जो आज्ञा। स्त्री को सब कुछ समझाकर मजदूर मेहमान के आगे आकर बैठा। बच्चे भी दौड़कर आगे आकर बैठे। मेहमान आकर बैठा तो कहने लगा कि अपनी स्त्री को बुला तो साथ में भोजन खायें मजदूर ने कहा वो अपने आप खा लेगी। मेहमान बोला – नहीं, सब साथ में खायें। तब मजदूर ने स्त्री को बुलाया।स्त्री आई तो आते हुए साड़ी के पलांद (पल्लू) से दीपक को बुझाती हुई आई।

मेहमान बोला दीपक जलाओ, बोले बाद में जलायेंगे, पहले भोजन खा लेवें, मजदूर की पत्नि दीपक इसलिए बुझाकर आई, जिससे कि मेहमान को अन्धकार में पता न चले कि हम पति–पत्नी ने भोजन नहीं खाया है। अब मेहमान व बच्चों ने सारा भोजन खाकर खत्म किया मजदूर व उसकी स्त्री ने केवल पानी पिया। ऐसी भक्ति करनी है। मेहमान, खाली न जाये पर खुश होकर जाए। ये गृहस्थ के अन्दर भक्ति करनी है। ''होवां मैं गृहस्थी परम उदारी दया धीरज सत्यव्रत धारी।''

हे प्रभु मैं दिल में दया धारूं।

''संसारी तो दया धारी, ना तो भलो वैराग।
वैरागी बंधन पड़े, तांके बड़े अभाग ।।''

प्रभु दया करो, मैं सत्यवादी बनूं। यज्ञ करूं, तीर्थ करूं, दान–पुण्य करूं । गृहस्थ के अन्दर यही भक्ति करूं। अगर बोलो तो त्याग करूं, त्याग की भक्ति कठिन है।पर वो करूं कैसे।

होवां मैं साधु निज सन्यासी,
मन्दिर छोड़ बनूं बनवासी।

जटा बढ़ाऊँ, वां मूंड मुडाऊँ।
कैसे ध्याऊँ प्रभु कैसे तुझे पाऊँ, मुझे बताओ।

हे प्रभु, मैं साधु बनूं ।सन्यासी, सन्यासी चौथे आश्रम का। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास। चौथे आश्रम को लेकर हे प्रभु सन्यासी होऊँ। मैं जंगल में रहूं । फल–फूल खाऊँ। जैसे कहो–जटा रखवाऊँ या सिर को मुंडाऊँ।मैं सब करने के लिए तैयार हूं, पर

प्रभु तेरा दर्शन हो। मेरा जन्म – मरण का फेरा मिट जावे अथवा

होवां मैं पण्डित कर्माचारी, ठाकुर पूजूं हो पुजारी ।
भोग लगाऊँ या घंटी बजाऊँ, मुझे बताओ।
कैसे ध्याऊँ प्रभु कैसे तुझे पाऊँ, मुझे बताओ ।

हे प्रभु । मैं कर्मकांडी होकर एक मंदिर बनाकर उसमें आपकी मूर्ति को बीच में बिठाकर आपकी आरती करूं। आरती करके भोग लगाऊँ। फिर पर्दा दूं। पर्दा क्यों देते हैं, पता है। खाते कैसे हैं ?, क्या खाना चाहिए ? किधर खाना चाहिए, कैसे खाना चाहिए, कितना खाना चाहिए, क्यों खाना चाहिए। फिर ये आपको बतायेंगे ?

‘‘भोजन भजन धन पुनि नारी।
ये चारों पर्दे के अधिकारी।’’

भोजन भी पर्दे के अन्दर खाना चाहिए, भजन भी पर्दे में हो । भोजन, भजन और धन भी पर्दे के अन्दर रखना चाहिए ? पांच हजार रूपया निकालकर नदी के किनारे जाकर बैठो तो आपको पता चले ? और माता, पुत्री, स्त्री भी पर्दे के अन्दर बैठेगी तो उसकी उतनी अधिक जस कीर्ति दुनिया के अन्दर होगी। पर्दा देते हैं। पर्दा तो ठीक है। परन्तु घंटी भी बजाते हैं। भोग लगाते हैं, फिर घंटी बजाते हैं, पुजारी–घंटी क्यो बजाते हैं ? एक प्रेमी ने कहा घंटी से भगवान को बुला रहे हैं। भगवान कोई बच्चा है क्या ? घंटी से बुलायेगें कैसे ? घंटी क्यों बजाते हैं पता है।

घंटी पर ही भगवान प्रसन्न हो जायें तो सब घंटी बजायें।याद करना।महात्मा, पूरन सत्‌गुरु, भगवान प्रेम और सेवा के भूखे हैं। किसी पदार्थ के नहीं। भगवान प्रेम से जल्दी प्रसन्न होते हैं। सच्ची करके पूछो। भगवान प्रेम पर ही अवतार लेते हैं। भगवान घंटी पर ही प्रसन्न हो जाएं।तो मैं घंटी बजाने के लिए तैयार हूं। हे प्रभु । अन्तर्यामी भगवान को ज्यादा पदार्थ नहीं केवल प्रेम चाहिए। आपके पास गुरु महाराज की मण्डली आयी है। सच्ची करके पूछो। आपके प्रेम की खीच हमें यहां लेकर आयी है हमने सोचा था कि सीधे जाते है, लन्दन ! उधर छः घंटे लगेंगे। फिर वहां से फेरा करेंगे। हमने सोचा जायें कैसे ? फिर क्या करें ? प्रेमियों ने फोन किये ? प्रेम के वश हम यहां चले आये।

ऊँची प्रेम सगाई, दुर्योधन का मेवा त्यागे,
साग विदुर घर खाई।
सबते ऊँची प्रेम सगाई, सबते ऊँची प्रेम सगाई ।
अर्जन के रथ घोड़ा हांका, भूल गई ठकुराई ।
राज युधिष्ठर यज्ञ सुकीना,
यज्ञ की झूठ उठायी, सबते ऊँची प्रेम सगाई।
दुर्योधन का मेवा त्यागे, साग विदुर घर खाई।
सबते ऊँची प्रेम सगाई।

कृष्ण भगवान ने इसी भूमि में लड़ाई के मैदान में रथ हांका यह बड़ी कथा है। एक बार नौकरों का काम किया ।नौकरों का काम किया तो घोड़ो की सेवा भी की होगी। अनुमान प्रमाण सिद्ध करता है। राजा युधिष्ठिर ने यज्ञ किया।श्री कृष्ण भगवान को लेकर के

आये– हे प्रभु। आज्ञा दें तो भण्डारा खोलें। कृष्ण भगवान कहते हैं। हे युधिष्ठिर। सेवाधारी तो सारे व्यवस्थित किये हैं ? युधिष्ठिर कहता है, हां प्रभु देखो। मण्डप घूमकर कृष्ण भगवान कहते हैं – हे युधिष्ठिर। और सेवा का सारा बदोबस्त तो दिखाया। सेवाधारी तो बहुत अच्छे हैं। सारे मुझे पसन्द आये हैं। परन्तु जब ये साधु, ऋषि, मुनि भोजन खाकर के उठेंगे तो पंगत की सफाई कौन करेगा ? युधिष्ठिर बोला– ये बात मैं भूल गया। अभी थोड़े नौकर रख देते हैं, तब भगवान श्री कृष्ण कहने लगे ये सफाई मैं करूंगा। युधिष्ठिर, अर्जुन, राजाओं ने बहुत मना किया लेकिन भगवान श्री कृष्ण ने कमर बांधकर झाड़ू हाथ में उठायी। जब ऋषि, मुनि, ब्राह्मण भोजन खाकर के उठे तो भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं झूठी पतलें उठाकर के बाहर फेंकी व

मण्डप की सफाई की। ये बात कहने में थोड़ी है, पर बहुत बड़ी है। अगर घर में किसी पुत्र की सगाई हो तो तुम अपने प्यारे से प्यारे मेहमान को कहना कि वो मण्डप की सफाई करके झाड़ू लगाये। तो क्या वो लगायेगा ? गरीब होगा तो लगायेगा। लखपति को कहें पंगत की सफाई कर। तो क्या करेगा ? वो तो खाना भी होटल में जाकर खायेगा और कहेगा कि मेरी इज्जत नास करता है। पर फिर भी भगवान ने लखपति होकर प्रेमवश ये सारे कार्य किये।

ऐसी प्रीत करी वृन्दावन, गोकुल नाच नचायी।
सूर क्रूर इस योग्य नाहीं, किस विधि करहूं बड़ाई ।
सबते ऊँची प्रेम सगाई, दुर्योधन के मेवा त्यागे,
साग विदुर घर खाई।। सबते ...... ।

प्रेम से बोलो हरे राम । "ऐसी प्रीत करी वृन्दावन, गोकुल नाच नचायी।" कई लोग अर्थ करते हैं। कृष्ण भगवान ने ऐसी प्रीत की। गोकुल में सखियों, औरतों को रात को मण्डल में नचाया। आपको यह बात पसन्द है क्या ? भगवान कहता है हे अर्जुन ! मुझे तीनों कालों में, सब लोकों में कोई कर्म करने की जरूरत नहीं है। परन्तु मैं नहीं करूंगा तो संसार भ्रष्ट हो जायेगा। उसके कारण मैं कर्म करूंगा, क्या भगवान ने नचाया ? यह ठीक नहीं है। अर्थ को अनर्थ करना भी पाप है। अभी भी देख सकते हो वृन्दावन में, उधर औरते नाचती हैं या लड़के। देखा है वृन्दावन में झूलों का महीना लगता है छोटे–छोटे लड़के उसमें नाचते हैं औरते नहीं। भगवान जब रमण रेती में गोकुल से गायों को चराने के लिए जाते थे तो 15–20 उनके

साथ जाते थे। तब भगवान मस्त होकर बंसी बजाता था। प्रभु की लीला जब भगवान बंसी बजाता था। आपने इतने दिन नहीं देखा हो तो आप कल देखना। भगवान जब मुरली बजाता था।तब टांग के ऊपर टांग रखकर नाचने के लिए तैयार होगा। घुंघरू बांधकर मुरली बजाकर लड़को ने भगवान को नचाया और भगवान भी उन लड़कों के साथ नाचे । ''ऐसी प्रीत करी वृन्दावन गोकुल नाच नचायी।'' गोपी, सखी एवं आली ये हिन्दी में कहते है। सिन्धी में भेनर कहते है। इसमें ये औरतों का नाम नहीं है। इसमें सत्संगी भाई–माई सभी आ गये। कृष्ण भगवान जब 7–8 साल के बच्चे थे। तब लड़को के साथ आपस में मिलकर रास करते थे ।

‘‘ऐसी प्रीत करी वृन्दावन, गोकुल नाच नचायी।’’ ग्वालों को नचाते थे। ‘‘सूर क्रूर इस योग्य नाहीं’’, किस विधि करहूं बड़ाई।’’ भगवान को नचाने के लिए जोगी अवतार लेकर के आये भगवान थोड़े पर कैसे खुश होता है ? दुर्योधन का मेवा त्याग कर विदुर साहब के घर भोजन खाया। ‘‘सरसो का साग, भोजन अलूणा, रुच–रुच भोग लगायो।’’ जैसे दुर्योधन ने एक बार यज्ञ कराया, मन में विचार किया सबको न्यौता दिया है,भगवान कृष्ण को भी न्यौता दें। भावना नहीं थी भगवान के लिए ।पर फिर भी कृष्ण भगवान के पास गया और बोला कृष्ण तेरे को पता है कि मैं कल यज्ञ कर रहा हूं ।कल भण्डारा खोलेंगे तेरे को न्यौता देने आया हूं आप बताओ कि आप आओगे कि नहीं ।किसी को भेजेंगे नहीं आपके पास क्यों कि तू

है पाण्डवों की तरफ।कृष्ण भगवान कहने लगे – हे मेरे प्यारे दुर्योधन मैं पाण्डवों के पास नहीं हूं मैं हूं प्रेम, सेवा के पास। दुर्योधन फिर बोलने लगा अपने आप आयेगा ना ? तब भगवान कृष्ण ने सोचा इसे लौटा देना भी ठीक नहीं, तब भगवान विचार करने लगे, नहीं जायेगे तो गिल्हा (निन्दा) करेगा। अच्छा नहीं लगेगा। तुलसीदास महाराज ने रामायण के अन्दर मूर्खों, दुष्टों को हाथ जोड़े हैं। पापियों को क्यों हाथ जोड़े हैं ? बोलो क्यों ? क्यों कि पापी निन्दा करके नरक में जायेंगे और हमें नरक से बचा लेंगे। भगवान ने कहा– अच्छा, मैं आऊंगा। दुर्योधन बोला–अपने आप आना। तब भगवान ने पूछा किस समय ? तब दुर्योधन बोला 10 बजे पूरे आना।देर न करना।तब भगवान कृष्ण ने कहा मैं आऊंगा तब दुर्योधन चला

जाता है । तब कृष्ण भगवान ने किसी व्यक्ति को भेजकर उद्धव को अपने पास बुलाया और कहा कल हमें 10 बजे दुर्योधन के पास यज्ञ में जाना है, उसने यज्ञ किया है तब उद्धव बोला हे स्वामी आपने उसका न्यौता क्यों माना है ?

''जांकी रहत न जानिये, गुरु प्रीत और नीत।
तांका भोजन पाइ के, बिसरे हरि की प्रीत ।।''

उद्धव कहने लगे हे भगवन् इसका न्यौता क्यों माना है ? तब भगवान कृष्ण कहने लगे अगर बात नहीं मानेंगे तो बात बनेगी नहीं। ये निंदा करेगा। फिर उद्धव कहने लगे भगवान इसका भोजन खाना पड़ेगा ? तब भगवान बोले इसका तो कोई योग ही नहीं बनता पर चलेंगे तो सही।तब उद्धव कहने लगा अगर चलेंगे

तो दुर्योधन बिना भोजन के छोड़ेगा ही नहीं, तब भगवान बोले उस बात की फिक्र तुम मत करो। उद्धव कहने लगे वो कैसे, तब भगवान कहने लगे तुम सुबह 8 बजे मेरे पास आना। उद्धव आया। कृष्ण भगवान ने पुरुषार्थ किया मैली पौशाक तमाम रंग लगाकर तुम्भी हाथ में लेकर तिलक लगाकर, माला पोथी लेकर लकड़ी हाथ में लेकर कंगला फकीर बनकर दोनों ऐसे वेश में दुर्योधन के यज्ञ में आये। दुर्योधन ने भगवान से पूछा था कि तुम मेरे यज्ञ में आओगे तो इसका मुझे ज्ञान कैसे होगा तब भगवान कृष्ण ने कहा था कि जब मैं तेरे यज्ञ में पैर रखूंगा तो तेरे यज्ञ के अन्दर ढ़ाई घड़ी (एक घन्टा) के लिए सारा पानी दूध हो जायेगा। यह तेरे को वर देता हूं। कृष्ण भगवान ने क्या किया। यज्ञ के दरवाजे के अन्दर जैसे ही पैर रखा। पानी दूध हो

गया। दुर्योधन समझ गया कि कृष्ण आया है और दुर्योधन दरवाजे पर आया तब फकीर वेश में भगवान कृष्ण ने कहा हे राजन तूने यज्ञ किया है हमको प्रसादी खिला तब दुर्योधन भगवान कृष्ण को पहचान न सका और कहा चुप कर ।कृष्ण भगवान चुप हो गया।और भगवान कृष्ण दुर्योधन के दूसरे दरवाजे पर आया भगवान कृष्ण ने कहा– हम दूर से ही तेरा नाम सुनकर के आये हैं।कृपा कर यज्ञ में से कुछ दें , हम चले जायेगें, तेरे को आसीसा करेंगे। दुर्योधन फिर बोला–चुप करो।मार न खाओ।कृष्ण भगवान ने फिर चुप की। भगवान कृष्ण फिर आये तीसरे दरवाजे पर।दुर्योधन भी आया।कृष्ण भगवान ने फिर कहा हे राजन् तू सदा ही सुखी हो तेरा यज्ञ सम्पूर्ण हो। कृपा करो। थोड़ी प्रसादी मेरे को दे।मुझे तो भूख नहीं लगी है परन्तु मेरे

चेले को भूख लगी है। थोड़ा प्रसाद दें। दुर्योधन बोला–चुप करो। कमाकर नहीं खाते हो। जाओ कमाकर के खाओ। कम ज्यादा बोला फिर भगवान कृष्ण आया चौथे दरवाजे पर। चार दरवाजे यज्ञ के थे। फिर भगवान कृष्ण ने कहा – हे राजन् हम को बहुत भूख लगी है, आसीसा करेंगे, तब दुर्योधन को आया गुस्सा। उसने पटेवालों (चौकीदारों) से कहा बांधो इनको। तीन–चार पटेवाले (चौकीदार) आये और भगवान कृष्ण और उद्धव के पीछे पड़ गये। आगे भगवान कृष्ण, पीछे उद्धव, पीछे पटेवाले (चौकीदार) भागे। पटेवाले (चौकीदार) वापिस लौट के आये। तब कृष्ण भगवान ने उद्धव से पूछा कैसे हो ? उद्धव बोला हे भगवान आपके पास काफी अटकलें (उपाय) हैं। आपने बहुत अच्छा किया तब भगवान

कृष्ण बोलने लगे जो गरीबों की रोटी चूसने वाला है मैं उसके घर भोजन कैसे खा सकता हूं। उद्धव बोला– स्वामी मेरे को तो भूख लगी है और एक बजे का समय हुआ है।तब भगवान बोले विदुर साध के घर चलते है। तब दोनों आये विदुर साध के दरवाजे पर और आवाज लगाई।

हे विदुर साध दरवाजा खोलो, तब विदुर साध ने दरवाजा खोला और भगवान को ऐसे गरीब के स्वांग में देखकर हैरान हो गया। बोला–प्रभु ये कैसा सांग पहना है। तब घर के अन्दर बैठाकर सारी खबर चार पूछी, आपको शंका होगी महाराज दुर्योधन ने चार बार देखा पर पहचान नहीं पाया। विदुर साध घर का दरवाजा खोलते ही पहचान गये।क्योंकि दुर्योधन

को आंखे नहीं थी पहचानने की। पहचानने के लिए भी आंखें चाहिए।प्रेम से बोलो हरे राम।तब विदुर साध ने भगवान से पूछा आपने कुछ खाया है ? तब भगवान बोले हम तो खाना खायेगें। तब विदुर साध ने अपने स्त्री को बोला भोजन बनाओ तब वह भोजन पकाने लगी, भगवान ने विदुर साध से कहा कुछ खाने के लिए हो तो हमें दो ।विदुर साध पांच–सात केले लेकर आया और प्रेम से विदुर भगवान को केले का छिलका देने लगा, भगवान ने प्रेम से छिलका खाया और गिरी विदुर साध नीचे फंकते रहा, भगवान ने छिलका खाकर उद्धव को इशारा किया कुछ बोलना नहीं ? और प्रेम से भगवान छिलके खाते गये और विदुर साध को दुर्योधन का सारा हाल बताया। भगवान केले के

छिलके खाकर बोलते हैं – हे विदुर साध ।ये बाहर से मंगवाये हैं क्या ? ऐसे तो मैंने कभी खाये ही नहीं हैं, बहुत मीठे हैं। हम और मंगवायेंगे ।तब विदुर बोलता है हां स्वामी ? बहुत मीठे हैं। विदुर साध बोले – स्वामी और खाओ, उस समय विदुर साध की स्त्री जो रोटी बना रही थी उसकी सारी नजर भगवान पर थी उसने देखा कि विदुर छिलके भगवान को खिला रहा है और केले की गिरी नीचे फेंक रहा है, तो वो दौड़ लगाकर के विदुर साध के पास आई और बोली भगवान को छिलके खिला रहे हो।

प्रेम की रीत कछूं नहिं राखत,
जाति न पाति नहीं कुल गारो।
प्रेमको नेम कहूं नहिं दीसत,
लाज न कान लग्यो सब खारों।

लीन भयों हरि सूं उर–अन्तर,
आठहुं याम रहे मत वारो।
सुन्दर को इक जान सके,
यह गोकुल गांव को पैंडोहि न्यारो।

''कह टेऊँ हरि प्रेम की, महिमा कहीं न जाय।
प्रेम भरे प्रवाह में, ज्ञान–ध्यान बह जाय।।''

विदुर साध कहता है – हे प्रभु ।मैंने भूल की है। भगवान ने उसको कहा ख्याल मत कर। विदुर ने कहा–प्रभु मैंने आपको छिलके खिलाये हैं। भगवान कहने लगा अब्बा (मेरे प्यारे) उसका ख्याल मत कर। विदुर साध ने तीसरा केला खोलकर भगवान को दिया और खाल नीचे फेंकी भगवान ने केला खाकर कहा हे विदुर साध इसमें पहले जैसा स्वाद नहीं है यह पहले

जैसी मीठी नहीं है, विदुर साध ने भगवान से पूछा क्यों ? भगवान ने कहा पहले वाले के अन्दर प्रेम था। तब विदुर साध के आंखों में से पानी आ गया। प्रेम से बोलो हरे राम।

''प्रेम छिपाया ना छिपे, जिस घट प्रगट होय।
जो भी मुख बोले नहीं, नैन देत हैं रोय ।।

विदुर साध की स्त्री ने भी भोजन भगवान की तरफ देखकर बनाया था तो वह भी भोजन में नमक डालना ही भूल गई। उसने भोजन में नमक तो डाला ही नहीं । भगवान और उद्धव भोजन खाने लगे तो उसमें नमक तो था ही नहीं। हम नमक के बगैर खाकर देखें तो हमें पता पड़े। भगवान कहता है – हे विदुर साध। तेरी स्त्री कहां से भोजन सीख के आयी है, ऐसा खाना मेरे

को न तो कभी राधा ने और न ही कभी रूकमणी ने खिलाया है।जन्म से खाया ही नहीं है, ये भोजन बनाना कहां से सीख के आयी है। बहुत मीठा है। आखिर में विदुर साध ने भोजन खाया और स्त्री की तरफ देखा और कहा भोजन में नमक तो है नहीं। स्त्री को आया रोना और कहने लगी स्वामी हमको क्षमा करो। भगवान के प्रेम में मैं नमक डालना ही भूल गई। भगवान कहते हैं तेरे को क्षमा क्यों चाहिए ? तो वह कहने लगी मुझसे भूल हुई है, मैंने भोजन में नमक डाला ही नहीं है।ऐसा होता है प्रेम।हे प्रभु अगर आप प्रसन्न हो तो मैं घंटी बजाने के लिए भी तैयार हूं।

कह टेऊँ सो करूं सद्वारी,
जिसमें होवे रूचि तुम्हारी।

मौन हो जाऊं वां तेरा गुण गाऊं,

‘‘कींअ रिझायां तोखे कींअ परचायां।’’

‘‘कह टेऊँ सो करूं सद्वारी’’ गुरु महाराज ने श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के भजनावली में लिखा है कि मैं हजार बार वो काम करूं । ‘‘ जिसमें होवे रुचि तुम्हारी।’’ हे प्रभु जिसमें आप खुश हो, आप कहो तो चुप करके बैठूं, एकान्त में तेरे गुण गाऊं। हे प्रभु अन्तर्यामी मुझे कोई रास्ता बताओ। एक प्रेमी ने एक भजन बताया। वो भी बहुत अच्छा है, परन्तु समय आकर के हुआ है। हे प्रभु तेरे को कैसे रिझाऊं? भगवान को रिझाया तो सारे संसार को रिझाया। भगवान रूठा तो सारा संसार रूठा। परलोक बिगड़ गया। भगवान किस पर प्रसन्न होता है। प्रेम विश्वास, प्रार्थना और त्याग पर। चूड़ाला कहती है– हे राजन्।

तूने एक तो मूर्खता की है। दूसरा ब्रह्मज्ञान को त्याग दिया है। और तूने सर्व त्याग नहीं किया। ब्रह्मज्ञान से जन्म–मरण का फेरा मिट जायेगा।त्याग से सुख और आनन्द होगा।इतना सुनकर राजा शिखरध्वज दिल में कहने लगा एक तो ये मेरे घर की बाते करता है, मैं त्यागी हूं, इसको यह बात खोलकर बताऊं।यह कथा इधर रखते हैं।जो चार वचन सुने हैं।वो अपने मन को बताना और समय से आओ। हमारी तो मर्जी हैं। जो चार दिन हम आपके पास हैं। उसमें समय से आओ। भगवान सबको समय दे रहा है।नौकरी वाले तो जल्दी छूटते होगें बाकी धन्धे वाले थोड़े दिन कम काम करें। भगवान शुभ कर्म का फल सबको देगा। जैसे–आज सब रविवार के दिन सत्संग में आकर बैठे हो वैसे ही कल भी सत्संग में शामिल होना।आप सब पर भगवान का आशीर्वाद होगा।